A Pratibha Spandan's Journal

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 | Volume 13, Issue 03, July-December 2026
© The Author(s) 2026

आधुनिक युग में भारतीय शास्त्रीय संगीत की संभावनाएं

DR. ROHIT KUMAR MOKTA
Assistant Professor (Vocal Music), Lal Bahadur Shastri Government College, Saraswati Nagar, Shimla, Himachal Pradesh
Published on 01.09.2026

सारांश

भारतीय शास्त्रीय संगीत भारत की सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण अंग है जिसकी परंपरा हजारों वर्षों से चली आ रही है। यह केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं बल्कि आध्यात्मिकता, भावनात्मक, अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक पहचान का सशक्त साधन भी है। वर्तमान समय में तकनीकी विकास, वैश्वीकरण तथा संचार माध्यमों के विस्तार से भारतीय शास्त्रीय संगीत के स्वरूप और प्रसार में महत्वपूर्ण परिवर्तन की है। इस शोध पत्र में आधुनिक युग में भारतीय शास्त्रीय संगीत की संभावनाओं चुनौतियों तथा भविष्य की दिशा का अध्ययन किया गया है/ अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि यदि परंपरा और आधुनिकता के मध्य संतुलन स्थापित किया जाए तो भारतीय शास्त्रीय संगीत वैश्विक स्तर पर और अधिक प्रभावशाली भूमिका निभा सकता है।

मुख्य शब्द: *भारतीय शास्त्रीय संगीत, तकनीक, वैश्वीकरण, संगीत शिक्षा, सांस्कृतिक विरासत, संगीत चिकित्सा।*

प्रस्तावना

भारतीय शास्त्रीय संगीत विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध संगीत परंपराओं में से एक माना जाता है। इसकी उत्पत्ति वैदिक काल से जुड़ी हुई है जहां स्वार्थ और ध्वनि को आध्यात्मिक साधना का माध्यम माना गया था। समय के साथ भारतीय संगीत में अनेक उतार-चढ़ाव देखे किंतु इसकी मूलतः में सुरक्षित रही। वर्तमान युग को सूचना और तकनीक का योग कहा जाता है। आज जीवन का कोई भी क्षेत्र तकनीक के प्रभाव से अछूता नहीं है और संगीत भी इसका अपवाद नहीं है। इंटरनेट सोशल मीडिया, डिजिटल प्लेटफॉर्म तथा ऑनलाइन शिक्षा केने संगीत की दुनिया को नया आयाम प्रदान किया है। इन परिवर्तनों ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को न केवल नए श्रोताओं तक पहुंचा है बल्कि इसके अध्ययन और शोध की संभावनाओं को भी विस्तृत किया है।

अध्ययन का उद्देश्य

- आधुनिक युग में भारतीय शास्त्रीय संगीत की स्थिति का अध्ययन करना
- संगीत शिक्षा एवं रोजगार के क्षेत्र का अध्ययन करना
- वर्तमान चुनौतियों और उसके समाधान प्रस्तुत करना
- भारतीय शास्त्रीय संगीत का वर्तमान स्वरूप

पूर्व समय में भारतीय शास्त्रीय संगीत मुख्ता राज दरबारों मंदिरों और विशेष संगीत सभाओं तक सीमित था। संगीत शिक्षा गुरु शिष्य परंपरा के माध्यम से दी जाती थी, जिसमें वर्षों तक कठोर साधना करनी पड़ती थी। परंतु आज परिस्थितियों बदल चुकी हैं वर्तमान समय में संगीत महाविद्यालय विश्वविद्यालय संगीत अकादमियों और ऑनलाइन मंचों के माध्यम से व्यापक स्तर पर संगीत सिखाया जा रहा है। हिंदुस्तानी और कर्नाटक संगीत दोनों ही परंपराएं की निरंतर विकसित हो रही है। युवा कलाकार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी पहचान बना रहे हैं। विभिन्न सांस्कृतिक महोत्सव, संगीत सम्मेलनों तथा प्रतियोगिताओं के माध्यम से शास्त्रीय संगीत को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के प्रयास किया जा रहे हैं।

आधुनिक तकनीक और भारतीय शास्त्रीय संगीत

तकनीक ने संगीत के संरक्षण और प्रसार में क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। पहले संगीत सीखने के लिए किसी गुरु के निकट रहना आवश्यक माना जाता था परंतु आज ऑनलाइन कक्षाओं, वीडियो लेक्चर और डिजिटल पाठ्यक्रम सामग्री ने संगीत सीखने की प्रक्रिया को सरल बना दिया है। यूट्यूब, पॉडकास्ट, संगीत एप्लीकेशंस और सोशल मीडिया के माध्यम से कलाकार अपनी प्रस्तुतियां विश्व भर के श्रोताओं तक पहुंचा रहे हैं। रिकॉर्डिंग तकनीक के विकास ने महान संगीतज्ञों की अमूल्य प्रस्तुतियों को सुरक्षित करने में सहायता प्रदान की है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता और डिजिटल

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 | Volume 13, Issue 03, July-December 2026
© The Author(s) 2026

विश्लेषण जैसे आधुनिक उपकरण भी संगीत अनुसंधान में सहायक सिद्ध हो रहे हैं। राग की संरचनाओं, स्वरों के प्रभाव व संगीत मनोविज्ञान पर भी शोध किया जा रहे हैं।

वैश्वीकरण और अंतरराष्ट्रीय संभावनाएं

वैश्वीकरण ने भारतीय शास्त्रीय संगीत को अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पंडित रविशंकर, जाकिर हुसैन, पंडित भीमसेन जोशी, पंडित हरिप्रसाद चौरसिया तथा अनेक कलाकारों ने भारतीय संगीत को विश्व मंच पर प्रतिष्ठित किया है ।आज अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में भारतीय संगीत के विद्यालय, कार्यशालाएं और सांस्कृतिक कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किया जा रहे हैं। विदेशी विद्यार्थियों में बढ़ती रुचि है दर्शाती है कि भारतीय संगीत आप केवल भारत की सांस्कृतिक पहचान ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर विरासत का भी हिस्सा बनता जा रहा है। विभिन्न अंतरराष्ट्रीय सांस्कृतिक उत्सवों तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रमों ने भारतीय कलाकारों को वैश्विक मंच उपलब्ध करवाया है। इससे भारतीय शास्त्रीय संगीत की प्रतिष्ठा और संभावनाएं दोनों बढ़ी है।

शिक्षा एवं रोजगार की संभावनाएं

आधुनिक समय में संगीत केवल शौक या कला तक सीमित नहीं रहा है वह रोजगार का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र बन चुका है। संगीत विषय में स्नातक, और शोध स्तर तक अध्ययन की सुविधा उपलब्ध है। संगीत के क्षेत्र में निम्नलिखित अवसर उपलब्ध हैं :

- शिक्षक एवं प्राध्यापक
- स्वतंत्र कलाकार
- शोधकर्ता
- संगीत समीक्षक
- सांस्कृतिक आयोजक
- संगीत निर्देशक
- डिजिटल कंटेंट निर्माता
- ऑनलाइन संगीत प्रशिक्षण
- संगीत चिकित्सक

विशेष रूप से डिजिटल प्लेटफॉर्म ने कलाकारों को आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान किया है। आज अनेक कलाकार ऑनलाइन शिक्षण लाइव प्रस्तुति और डिजिटल सामग्री निर्माण के माध्यम से सफल करियर बना चुके हैं।

संगीत चिकित्सा और भारतीय शास्त्रीय संगीत

हाल के वर्षों में संगीत चिकित्सा के क्षेत्र में भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रभाव का अध्ययन बड़ा है। विभिन्न शोधों में पाया गया है कि कुछ राग मानसिक तनाव को कम करने, एकाग्रता बढ़ाने और भावनात्मक संतुलन स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। अस्पतालों, पुनर्वास केन्द्रों और मानसिक स्वास्थ्य संस्थानों में संगीत चिकित्सा के प्रयोग बढ़ रहे हैं। यह क्षेत्र भविष्य में भारतीय शास्त्रीय संगीत के लिए नए शोध एवं रोजगार के अवसर प्रदान कर सकते हैं। चुनौतियां व्यापक हैं परंतु फिर भी कुछ चुनौतियां सामने हैं

चुनौतियां

- युवाओं का त्वरित मनोरंजन की ओर आकर्षण
- संगीत सीखने में अनुशासन की आवश्यकता
- व्यावसायिक संगीत के बढ़ते प्रभाव के कारण शास्त्रीय संगीत की सीमित लोकप्रियता
- ग्रामीण क्षेत्रों में गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा का अभाव

HILL QUEST
(Multidisciplinary National Peer-Reviewed/Refereed Journal)
ISSN 2454-3144 | Volume 13, Issue 03, July-December 2026
© The Author(s) 2026

- पारंपरिक गुरु शिष्य परंपरा का धीरे-धीरे कमजोर होना

समाधान

इन चुनौतियों से निपटने के लिए निम्नलिखित उपाय किए जा सकते हैं

- विश्वविद्यालय स्तर पर संगीत शिक्षा को प्रोत्साहन देना
- युवा कलाकारों के लिए अधिक मंच उपलब्ध कराना
- डिजिटल माध्यमों का प्रभावी उपयोग करना
- संगीत छात्रवृत्तियों और शोध अनुदानों में वृद्धि करना
- पारंपरिक ज्ञान और आधुनिक तकनीक के समन्वय को बढ़ावा देना ग्रा
- मीण क्षेत्रों में संगीत प्रशिक्षण सुविधाओं का विस्तार करना

निष्कर्ष

भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल अतीत की धरोहर नहीं बल्कि भविष्य की आवश्यकता भी है। आधुनिक तकनीक वैश्वीकरण और शिक्षा के विस्तार ने इसके विकास के नए द्वार खोले हैं। आज भारतीय शास्त्रीय संगीत विश्व के अनेक देशों में सम्मान पूर्वक सुना और सिखाया जा रहा है। आवश्यकता इस बात की है कि हम इसकी परंपरागत विशेषताओं को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक साधनों का उपयोग करें। यदि युवा पीढ़ी को इस संगीत से जोड़ा जाए और संगीत शिक्षा को अधिक सुलभ बनाया जाए तो भारतीय शास्त्रीय संगीत आने वाले समय में विश्व संस्कृति मंच पर और अधिक प्रभावशाली स्थान प्राप्त कर सकता है।

संदर्भ

1. भार्गव डा अंजना, भारतीय संगीत शास्त्रों में वाद्यों का चिन्तन, कनिष्क पब्लिशर्स दिल्ली-2009.

2. वर्मा महादेवी-सप्तपूर्णा, दिल्ली लोक भारती प्रकाशन-1967.

3. सिंह आर. एल.- लोक प्रकाषन सिद्धांत एवं व्यवहार, रत्न प्रकाशन मंदिर दिल्ली- 1984.

4. भातखण्डे विष्णु नारायण- हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति, संगीत सदन प्रकशन- 1993.

5. मिश्र लालमणी- भारतीय संगीत वाद्य, भारतीय ज्ञानपीठ-1973.